उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह): ऐसा है नीलोत्पल बसु जी ने इतनी अच्छा हिन्दी में भाषण दिया। भले ही मुझ को देख कर उनको प्रेरणा मिली हो, मैं इसके लिए उनको बधाई देता हूं कि बहुत शुद्ध और बड़े अच्छे ढंग से अपना हिन्दी में भाषण दिया। अब मैं सोमपाल जी से अनुरोध करुंगा।

श्री सोमपाल: उपसभाध्यक्ष महोदय, बहुत धन्यवाद। नीलोत्पल बसु जी ने बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया है। जो गांव के रहने वाले लोग हैं, 1991 की जनगणना के अनुसार 74.3 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में रहती है। जहां तक ऋण व्यवस्था का प्रश्न है, यह बहुत ही दोषपूर्ण और अन्यायपूर्ण है गांवों की दृष्टि से। रिज़र्व बैंक के यह निर्देश हैं सभी बैंकों को कि प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को जिसमें लघु उद्योग, ग्रामीण क्षेत्र, जनजाति, अनुसूचित जनजाति और ग्रामीण विकास के लिए जो ऋण है वह कुछ निर्धारित प्रतिशत में वहा ज़रूर जाना चाहिये। यह बहुत ही दुखद बात है कि जितने भी बैंक है चाहे राष्ट्रीयकृत बैंक हो या जितनी भी वित्तीय संस्थाएं सरकार की हैं किसी ने भी रिज़र्व बैंक के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया है। एक राष्ट्रीयकृत बैंक के इलावा किसी ने भी कृषि के बारे में जो 1.8 प्रतिशत का आदेश था, उस लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया। सब का 12-13 प्रतिशत है यही स्थिति जनजाति क्षेत्रों के विषय में है और देश को ग्रामीण ऋण व्यवस्था में है। जहां तक यह बात है कि बैंकों की व्यवस्था अलाभकारी हो जाती है गांवों में देने से वापसी नहीं आती, ये सरकारी आंकड़े हैं कि गांवों से ऋण की अदायगी इस औद्योगिक और वाणिज्यक क्षेत्र के मुकाबले में पिछले पांच वर्षों में कई प्रतिशत बेहतर हैं। यह उल्टा है, यह विपरीत है। यह आरोप जो लगाया जाता है कि गांवों से अदायगी नहीं होती है इसलिए वह गलत हो जाता है। इसलिए मैं सरकार से चाहूंगा कि पूरी ऋण व्यवस्था को दुबारा पुनरीक्षित करने की आवश्यकता है। और जो आदेश रिजर्व बैंक ने दिए हैं, जो लक्ष्य सरकार ने निर्धारित किए है सभी वित्तीय संस्थाओं को उसके लिए बाध्य किया जाए कि उन लक्ष्यों की वे प्राप्ति करें और उन लक्ष्यों को भी दुबारा सुधारने की आवश्यकता है ग्रामीण जनसंख्या के अनुपात में। बहुत धन्यवाद।

Need to Celebrate Birth Centenary of Nataji Subhas Chandra Bose

DR. MURLI MANOHAR JOSHI (Uttar Pradesh): Sir, I rise to draw the attention of this House...*(Interruptions)*

मुझे इस विषय में अंग्रेजी में बोलूं ऐसा कुछ लोगों ने अनुरोध किया था...**(व्यवधान)** मैं तो हिंदी में ही भाषण करता हूं लेकिन पिछली बार जब मैंने कुछ प्रो० एस० एन० बोस के बारे में बोला था....**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह): यदि मुरली मनोहर जोशीजी बंगला जानते तो मैं इनसे कहता कि बंगला में बोलिए....**(व्यवधान)**

डा० मुरली मनोहर जोशी: (बंगला में बोले)

उपसभाध्यक्ष श्री शंकर दयाल सिंह: क्योंकि नीलोत्पल बसु जी ने हिन्दी में दिया। आप नेताजी का यह मामला उठा रहे है तो मैं आपसे कहता....**(व्यवधान)**

उपसभाध्यक्ष शंकर दयाल सिंह: नहीं ठीक है। आप जिस भाषा में चाहें बोलें।

डा० मुरली मनोहर जोशी: मैं आपकी सम्मान करता हूं।

मैं इस सदन का ध्यान नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की आने वाली शताब्दी के वर्ष के संबंध में आकर्षित करना चाहता हूं और सदन के माध्यम से सरकार और देश का ध्यान भी इस ओर आकर्षित करना चाहता हूं।

नेताजी एक जन्मजात देशभक्त थे। वे एक क्रांतिकारी थे और उनकी जन्म शताब्दी 23 जनवरी, 1996 से शुरू हो रही है और 23 जनवरी, 1997 तक चलेगी। मैं ऐसा समझता हूं कि हमारे देश की वर्तमान पीढ़ी को नेताजी के जीवन, उनके कर्तत्व, उनके बलिदान तथा भारत के विषय में जो उनकी परिकल्पनाएं और आशाएं थीं, उनका परिचय कराया जाना चाहिए। उनका जो योगदान इस देश के स्वाधीनता संग्राम में था उससे भी इस देश की वर्तमान पीढ़ी को परिचित कराया जाना चाहिए। अब बहुत कम समय रह गया है। जनवरी में ही शताब्दी समारोह के कार्यक्रम शुरू होंगे। लेकिन मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि इस विषय में सरकार ने कोई गंभीर कदम नहीं उठाए है। मैंने कुछ मंत्रालयों को इसके बारे में पत्र लिखे थे पर उनसे भी जो मुझे उत्तर प्राप्त हुए हैं वे बड़े निराशाजनक हैं। उनमें किसी प्रकार का उत्साह नहीं दिखायी देता है। मैं उस पत्राचार को समयाभाव के कारण सदन के सामने नहीं रखना चाहता हूं। लेकिन जिस प्रकार की भावना मुझे उन पत्रों में दिखाई देती है उससे मुझे ऐसा लगता है कि शायद सरकार इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर जैसा उसे ध्यान देना चाहिए था वह ध्यान नहीं दे रही है।

नेताजी का जन्म 1897 ई० में कलकत्ता में हुआ था और उनकी शिक्षा दीक्षा के पश्चात वे विलायत गए थे। शायद इस उद्देश्य से भेजे गए थे कि वे देश की प्रशासनिक सेवाओं में, सिविल सर्विस में आएंगे। उन्होंने उसको ठुकराया और देश के स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। मुझे उनके कुछ पत्रों को पढ़ने का अवसर मिला जो नेताजी ने जब वे सुभाष चन्द्र बोस

के नाम से जाने जाते थे, लन्दन से अपने सहपाठियों को लिखे। मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहा हूं। छात्र रहा हून। हमारे विश्वविद्यालय के दो प्रोफेसर हैं, प्रो० के० के० भट्टाचार्य और पंडित क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय। पंडित क्षेत्रेश चट्टोपाध्याय के पास उन पत्रों का संग्रह है। अब उनके पुत्र के पास वे हैं जो नेताजी ने उस समय लिखे थे। सर के० के० भट्टाचार्य जिनको हम लोग प्रेम से सर कहते थे वे नेताजी के विषय में और उनके जीवन से उनके अंदर की आग से, देशभक्ति से इलाहाबाद विश्वविद्यालय और तमाम विशवविद्यालयों को अवगत कराते रहते थे। आज उन सब बातों को हम भूल रहे हैं और उनकी तरफ सरकार का कोई ध्यान नहीं है। देश की पीढ़ी को उससे परिचित नहीं कराया जा रहा है। नेताजी जब कांग्रेस के अध्यक्ष थे तो उनकी जो भारत के विषय में परिकल्पना थी वह स्पष्ट थी। शायद वे पहले कांग्रेस के अध्यक्ष थे सभापति थे जिन्होंने एक योजना के लिए समिति बनायी थी प्लानिंग कमेटी बनायी थी और उसमें प्रो० मेघनाथ साहा और महालनोविस जैसे विद्धान लोग, वैज्ञानिक लोग सदस्य थे और एक तरह से आयोजन के प्लानिंग के जनक थे वे इस देश में। उनका कुछ मामलों में मतभेद हुआ और 1938 में कांग्रेस के सभापति पद से वे हटे और उसके बाद उन्होंने एक नई पार्टी की स्थापना की लेकिन उससे भी ज्यादा फिर वे विदेशों में गए । जर्मनी, इटली, जापान की उन्होंने यात्रा की, दक्षिण-पूर्वी एशिया में वह गए और आजाद हिन्द फौज की उन्होंने स्थापना की थी। ये सब बाते ऐसी हैं कि जो उनके अन्दर की देशभक्ति को और भारत की स्वाधीनता के लिए संघर्ष के प्रति प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती हैं और इन सब बातों का पता हमारे देश के लोगों को, नौजवानों को, विद्यालयों और छात्रों को होना चाहिए। आजाद हिन्द फौज शायद एक ऐसी फौज थी जिसमें उन्होंने इस देश के हर धर्मावलंबी को, हरेक मतावलंबी को और अंग्रेजी साम्राज्य के विरूद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया, वह फौज अपने आप में एक नमूना थी और उसके योगदान को हम भूल नहीं सकते। शायद आई० एन० ए० के कारण ही अंग्रेजों को इस देश से जल्दी जाने का निर्णय करना पड़ा। इसलिए आई० एन० ए० की भूमिका भी इस देश के लोगों को पता लगनी चाहिए। इसलिए उनके समस्त जीवन को, उनके क्रियाकलापों को, उनके शौर्य को, उनके बलिदान को और भारत के बारे में जो उनकी कल्पना थी उसका सारे देश को पता मिलना चाहिए। नेताजी ने यह कहा था, उन्होनें यह नारा दिया था "दिल्ली चलो" और उन्होंने ही कहा था कि "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूंगा" इसलिए उन्होंने एक भारतवासियों को बलिदान का आह्वान किया था जिसकी आज इस देश में सब से बड़ी आवश्यकता है। जहां इस देश में स्वार्थ और तंदूर कांड जैसे कांड हो रहें हैं वहां आज इस देश के लोगों को अपना बलिदान देश की समृति और सुरक्षा के लिए करने की जरूरत है और मैं समझता हूं कि नेताजी का जीवन उसके लिए एक आदर्श जीवन है और उसका सारे देश के लोगों को अच्छी तरह से परिचय कराया जाना चाहिए। एक प्रकार से अंग्रेज़ भी उनसे डरते थे, उनको स्प्रिंगिंग टाईगर कहा जाता था और उनकी बहादुरी और उनका देश के प्रति जो एक ममत्व था, उससे भी अंग्रेज बहुत भयभीत रहते थे।

इसलिए मैं यह चाहूंगा उपसभाध्यक्ष जी, मैं समाप्त करना चाहता हूं इसे कि नेताजी की शताब्दी का वर्ष बहुत धूमधाम से और बहुत योजनापूर्वक मनाया जाना चाहिए। केवल हम उनके प्रति श्रद्धांज़लि अर्पित करें या कहीं पर उनके लिए जलसे कर दें, इतने से काम नहीं होना चाहिए। सब से पहले तो मैं यह चाहूंगा कि इस मामले में एक सर्वदलीय समिति बने, आल पार्टी कमेटी बने, क्योंकि नेताजी सभी पार्टियों के थे, उनको किसी एक पार्टी के रूप में प्रक्षेपित करना यह उचित नहीं होगा। संसद् में उनकी प्रतिमा लगाई जाए और वह प्रतिमा नेताजी का जो वेश था जिससे कि उन्होंने सारे देश को अनुप्राणित किया, जो फौजी वेश में उनकी प्रतिमा थी वही संसद् के परिसर में लगाई जानी चाहिए। फिर मैं यह भी चाहूंगा कि नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के लिए एक राष्ट्रीय फाउंडेशन बनाई जाए जिसमें दस करोड़ रूपये केन्द्र सरकार की ओर से दिए जाएं और यह नेताजी का फाउंडेशन ऐसा हो कि जो उनके तमाम कार्यों को प्रकाशित करे और उनके संबंध में छात्रवृत्तियां इत्यादि सब जगह दें, विश्वविद्यालयों के अन्दर इंटरनेशनल अंडरस्टेंडिंग के लिए चेयर्ज़ बनाई जाएं तो नेताजी के नाम से नेताजी सुभाष चेयर्ज़ बनें और वे प्रत्येक विश्वविद्यालय में और कम से कम केन्द्रीय विश्वविद्यालय में तो स्थापित होनी ही चाहिएं और वर्ष 1996 में एक पुरस्कार जो इंटरनेशनल अंडरस्टेंडिंग के लिए राष्ट्रीय समझदारी के लिए, अन्तर्राष्ट्रीय भाईचारे के लिए होना चाहिए। उसकी भी स्थापना की जाए। इसके साथ-साथ 23.1.96 को लाल किले पर एक बड़ी रैली की जानी चाहिए और हरेक राज्य सरकार की राजधानी में रैली की जानी चाहिए और विद्यालयों के अन्दर उस दिन 23 जनवरी, 1996 और 23 जनवरी, 1997 को बड़े-बड़े

आयोजन रैलीज़ के रूप में किए जाने चाहिए। फिर मैं यह भी चाहूंगा कि हर प्रमुख स्थान पर सेमिनारज़ आयोजित किए जाएं जिसमें नेताजी और आजाद हिन्द फौज और उनके तमाम कृतित्व के बारे में लोगों को बताया जाए। इस तरह से आज में नेताजी के अच्छे स्मारक बने तो मैं यह चाहूंगा कि यह जो भारत में भारतीय सेना हेडक्वार्टर है सेना भवन जिसे कहते हैं उसका नाम नेताजी सुभाष बोस भवन रखा जाए और साथ ही साथ जो हमारी अकैडमीज़ हैं, जिनको आज आप मिलिट्री अकैडमीज़ कहते हैं उनमें से एक या दो का नाम आजाद हिन्द फौज अकैडमी रखा जाए जिससे कि आजाद हिन्द फौज का भी हम स्मरण करें। वह उसके बारे में उसका तो कोई स्मारक है ही नहीं, तो आजाद हिन्द फौज स्मारक के रूप आप खडगवासला में और देहरादून में जो अकैडमीज़ हैं उनका नामकरण करें। नेताजी की इस शताब्दी में एक मैमोरियल वोल्यूम भी छपे जिसमें उनके तमाम क्रियाकलाप और उनके संबंध में अधुनातन जानकारी दी जाए और जितने पत्र जिनका मैंने उल्लेख किया है जो नेताजी के सहयोगियों के पास है उनको इक्ट्ठा करके उनको छापा जाए।

अंत मैं यह कहूंगा मैं कि केन्द्र सरकर के पास जो रूस की सरकार ने 1992 में एक नोट दिया था नेताजी के बारे में वह नोट आज प्रकाशित करने की जरूरत है। उसको सारे देश को बताया जाए कि आखिर रूस की सरकार ने नेताजी के रूस भ्रमण के बारे में क्या कहा था और उसमें क्या तथ्य हैं, उसे शायद अभी गोपनीय विभाग के अन्दर रखा हुआ है। गृह मंत्री जी यहां बैठे हुए हैं, मैं उनसे भी अनुरोध करुंगा कि उस रिपोर्ट को भी प्रकाशित करें। और 1956 में जापान की सरकार ने "प्लेन क्रैश" के संबंध में जो इनवेस्टीगेशंस किए थे और उस की रिपोर्ट आप के पास भेजी थी, आप उसे प्रकाशित करें जिससे कि देश को नेता जी के संबंध में समस्त तथ्यों की जानकारी हो सके।

महोदय, मेरा माननीय गृह मंत्रीजी से अनुरोध है कि वह इन तमाम प्रश्नों पर जल्द-से-जल्द निर्णय लें, देश को आश्वस्त करें और देश के सामने नेता जी जैसे महान बलिदानी भारत के समूतों को जिन्हें महात्मा गांधी ने "पैट्रिऑट" ऑफ "पेट्रिऑट्स" कहा था, उन के बारे में सारे देश को बताएं और हम सारे देश का आव्हान करें कि यह नेता जी के मार्ग पर चलकर देश के नव-निर्माण में योगदान करें। बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री शंकर दयाल सिंह): देखिए, ऐसा है कि सदन के सभी लोग इस के साथ एसोसिएट करना चाहते हैं, यह मान लिया गया क्योंकि सचिवालय की ओर से यह कहा गया है कि बहुत लंबी सूची है और चैयरमेन साहब ने यह कहा है कि सूची में जिन के नाम हैं उन्हीं को मौका दिया जाए, लेकिन यह एक ऐसा विषय जोशी जी ने उठाया है जिस में कि पूरा सदन उन के साथ है। मैं समझता हूं कि सरकार इस पर उचित कार्यवाही करेगी।

डा॰ मुरली मनोहर जोशी: माननीय गृह मंत्रीजी यहां बैठे हैं अगर वे इस बारे में कुछ कहें तो उचित होगा।

गृह मंत्री (श्री एस॰बी॰ चव्हाण): उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रधान मंत्रीजी को सदन की भावना के अनुसार बताऊंगा और अनुरोध करुंगा कि यह शताब्दी वर्ष मनाया जाए।

Discontent Due to denial of possibilities of higher education through Indian Languages by the University Grants Commission

श्री राजनाथ सिंह (उत्तर प्रदेश): उपाध्यक्ष महोदय, एक दिन नवभारत टाइम्स के प्रथम पृष्ठ पर यह समाचार पढ़कर "भारतीय भाषाओं में शिक्षा को आयोग ने नकारा" मुझे आश्चर्य ही नहीं हुआ बल्कि उस के कारण बेहद कष्ट भी हुआ।

महोदय, भारत के संविधान में यह स्पष्ट व्यवस्था है और जिससे आप ही नहीं सारा सदन परिचित है कि शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं होनी चाहिए। शायद विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अपना यह सुझाव भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय यानी मानव संसाधन विकास मंत्रालय को इस आधार पर भेजा था क्योंकि एक निजी विधेयक सदन में प्रस्तुत हुआ था और संभवतः वह निजी विधेयक मेरा ही था। उस पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की राय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने मांगी थी। महोदय राय देते समय आयोग ने यह भी कहा कि यदि हम भारतीय भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाते हैं तो हमारा राष्ट्रीय एकता और अखंडता का जो सपना है, वह कभी साकार नहीं हो पाएगा।

महोदय, मुझे याद आया कि उस समय अंग्रेज भी यह कहा करते थे कि जिस दिन अंग्रेज इस देश में नहीं रहेंगे, उस दिन अंग्रेजी भारत में नहीं रहेगी, उस दिन भारत की एकता और अखंडता समाप्त हो जाएगी, खंडित हो जाएगी। उसी प्रकार का तर्क आज इस देश में अंग्रजी-दां लोगों द्वारा दिया जा रहा है। महोदय, जो कुछ भी समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है, उसके कारण